गर्व है कि हम गुर्जर हैं

बी. एल. गुर्जर
239 महादेव नगर, जगतपुरा,
जयपुर, राजस्थान

क्योंकि:–

1. इस समाज के अनेक शूरूवीरों ने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर किये हैं एवं हजारों की संख्या में नौजवान देश की सीमाओं की रक्षा में तैनात हैं।
2. गुर्जर समाज वास्तविक रूप से एक धर्मनिरपेक्ष समाज हैं। इस समाज में हिंदू, मुस्लिम, सिख आदि धर्मों के अनुयायी हैं एवं सभी धर्मों के प्रति सम्मान रखते हैं।
3. जम्मू कश्मीर सहित पूरे देश, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान में इस समाज के लोग बहुतायत में निवास करते हैं। जम्मू कश्मीर में एक बडी जनसंख्या मुस्लिम गुज्जरों की है, जो देश के अन्य भागों के गुर्जरों की तरह ही अपने आपको समाज का अभिन्न मानते हैं एवं भारतीयता से प्रेम करते है।
4. सामान्य पूजा पाठ के अतिरिक्त अत्यधिक धार्मिक कर्मकांडो एवं पाखंडो में यह समाज विश्वास नहीं करता।
5. इस समाज का एक भव्य इतिहास है।
6. आम सामाजिक व्यक्ति आत्मविश्वासी, चरित्रवान, मेहनतकश एवं स्वाभिमानी है।
7. साधारण रहन–सहन एवं सीमित साधनों से गुजर बसर करते है।
8. ईश्वरीय कृपा से अधिकांश लोग सुदृढ शारीरिक बनावट एवं आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होते हैं। आज के जमाने की स्थूलकाय शरीर की समस्या इस समाज के लोगों में नहीं के बराबर है।
9. प्रकृति के नजदीक नदी नालों एवं सुरम्य स्थानों पर रहने का मौका मिलता है एवं पशु–पक्षियों से निकटता का रिस्ता है।
10. शुद्ध खान–पान, दूध, दही, घी आदि सेवन करने का मौका मिलता है।

सोने में सुहागा होगा यदि जातीय सरदार निम्नाकिंत बातों पर भी गौर करें :–

1. हम अपना आलस्य त्यागें एवं काम समय पर एवं पूरी निष्ठा के साथ करें।

2. मानसिक श्रेष्ठता शहरी लोगों की बापौती नहीं। हर इंसान में करीब करीब बराबर दिमाग होता है। दृढ निश्चयी कोई भी छात्र किसी भी परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पर पहुंच सकता है। आज के कंपीटिशन के युग में सही गाइड चुनकर मेहनत के बल पर मन चाही सफलता पाइयें।

3. दिखावा छोडिये। दहेज आदि के माध्यम से बडे बनने की प्रवृति छोडिये। बेकार की डींग हांकने से कोई फायदा नहीं, बल्कि दूसरे नफरत करते हैं। आज आपका किया हुआ ही फल देगा। अतः वर्तमान की मेहनत एवं कर्म पर ध्यान दीजिए।

4. समय बदल रहा है। खेती के भरोसे काम नहीं चलेगा। स्वरोजगार के दूसरे धंधे ढूंढिये। मेहनत मजदूरी करने वालों को सम्मान दीजिए। छोटे–छोटे काम करके ही आदमी बडा बनता है।

5 लोकतंत्र में उपलब्ध अवसरों का फायदा उठाइये। आप आगे जब ही बढ पायेंगे जब राजनैतिक पार्टियों के कर्ताधर्ता आपकी राजनैतिक शक्ति को समझेंगे। समाज हित में जो भी मुद्दा सार्वजनिक रूप से मुखर है उसमें मदद करने वाले राजनीतिज्ञों का फायदा एवं विरोधियों को नुकसान होना चाहिए। तभी आपको कोई पूंछेगा एवं समाज की प्रगति होगी। इसके लिए पृथक संगठन की आवश्यकता है।

6. दूसरे समाज एवं सम्प्रदाय के प्रति सम्मान एवं इंसानियत का भाव रखिये।

7. राजनैतिक पार्टियों के कार्यकर्ताओं को अपनी पार्टी के प्रति पूर्णतः वफादार होना चाहिए। राजनीति में आगे बढने के लिए सामाजिक गतिविधियों से ज्यादा अपनी राजनैतिक पार्टी में पूर्ण समर्पित भाव से काम करने की आवश्यकता है एवं आमजन को भरसक राहत पहुंचाने के लिए हमेशा यत्नशील रहना चाहिए।

8. गांवों में सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं के प्रति जागरूक रहिए एवं भ्रष्टाचारियों का विरोध करिये।

9. क्षेत्र में स्थापित विद्यालयो, महाविद्यालयों,अस्पतालों आदि संस्थाओं एवं तैनात कर्मचारियों/अधिकारियों पर संगठित रूप से नजर रखिये। प्राइवेट संस्थानों के बजाए सरकारी संस्थानों के कर्मचारी/अधिकारी अधिक योग्य एवं सक्षम होते है। आवश्यकता है आमजन के जागृत होने की। यदि आमजन जागृत होकर मानीटरिंग करेंगे तो इन्हीं सरकारी संस्थानों के रिजल्ट कई गुना बेहतर होंगे।

10. ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा/महाविद्यालयी शिक्षा के हालात बहुत खराब हैं। सम्मानित लेखकों द्वारा रचित किताबों की छात्र आवश्यकता नहीं समझते एवं वनवीक सीरिज ही उनकी प्राण वायु है। छात्र नियमित रूप से कॉलेज जाना उचित नहीं समझते। इसके लिए जन सामान्य एवं जन प्रतिनिधियों को आगे आना होगा एवं उच्च शिक्षा के कर्ताधर्ताओं से परीक्षा प्रणाली एवं मूल्यांकन प्रणाली को बदलकर सार्थक बनाने की मांग करनी चाहिए। प्रश्न पत्र में 10–15 प्रश्नों में से कोई से 5 प्रश्न अनिवार्य वाली व्यवस्था तुरन्त समाप्त होनी चाहिए। किताब के प्रत्येक अध्याय में से कुछ न कुछ प्रश्न पत्र में पूछा जाना अनिवार्य होना चाहिए। उत्तर पुस्तिकाओं की पूरी ईमानदारी के साथ जांच आवश्यक है। रिजल्ट खराब होने पर संबंधित शिक्षक की जवाबदेही निश्चित होनी चाहिए। फिर देखिये, कॉलेज में एक भी क्लाश नहीं छूटेगी।

11. गांवों में भाईचारा बढाइये। मिलजुल कर हम गांवों का कायाकल्प कर सकते है।

******